

पत्र सूचना कार्यालय (रक्षा विंग)

भारत सरकार

'हर काम देश के नाम'

नई दिल्ली, अग्रहायण 20, 1945

सोमवार, दिसम्बर 11, 2023

सैनिक स्कूलों के कार्य निष्पादन को बेहतर बनाने के लिए की गई पहलें

सैनिक स्कूलों का प्रमुख उद्देश्य कैडेटों को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश के लिए शैक्षिक, शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार करना है। 33 सैनिक स्कूलों के कैडेटों की शैक्षिक उत्कृष्टता को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न उपाय किए गए हैं। इन उपायों में पारस्परिक प्रशिक्षण आयोजित करना और कैडेटों की प्रगति का गहन मानीटरिंग करना, धीमी गति से सीखने वालों के लिए के लिए सुधारात्मक कक्षाएं, नवीनतम शैक्षणिक पद्धतियों को लागू करना, अध्यापकों के लिए सेवाकालीन कोर्स और प्रशिक्षण, कैडेटों के लिए अतिथि वक्ताओं तथा प्रेरणात्मक टूर इत्यादि का आयोजन करना शामिल हैं।

सबसे पहले वर्ष 1961 में सरकार द्वारा सैनिक स्कूल सोसाइटी के तत्वाधान में 05 सैनिक स्कूल खोले गए थे। तथापि, जनता की बढ़ती हुई अपेक्षाओं को पूरा करने और युवाओं में राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना पैदा करने के लिए विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के कैडेटों को आकर्षित करने के लिए, बाद में देशभर में 28 और सैनिक स्कूल खोले गए जिनकी कुल संख्या अब 33 हो गई है।

हाल में, वर्ष 2021 में सरकार ने भागीदारी पद्धति के अन्तर्गत सरकार / निजी स्कूलों / एनजीओ / ट्रस्ट आदि के साथ नए सैनिक स्कूलों की स्थापना के लिए एक योजना अनुमोदित की है ताकि सैनिक स्कूलों के लोकाचार, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय गौरव के साथ शिक्षा पद्धति को समायोजित करके मौजूदा सैनिक स्कूलों के पैटर्न पर से

इस प्रकार के नए सैनिक स्कूल स्थापित किए जा सकें । भागीदारी पद्धति के अन्तर्गत अभी तक कुल 42 स्कूल अनुमोदित किए गए हैं जिनमें से 19 स्कूलों में शैक्षिक सत्र प्रारंभ हो चुके हैं ।

लैंगिक समानता के लक्ष्य की प्राप्ति और सशस्त्र बलों में महिलाओं की भर्ती हेतु मार्ग प्रशस्त करने के लिए वर्ष 2021-22 से सभी 33 सैनिक स्कूलों में बालिका कैडेटों को भी प्रवेश दिया गया है ।

सैनिक स्कूल इन वर्षों के दौरान कैडेटों को अच्छे नागरिक के रूप में तैयार करने और जीवन के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए उन्हें गुणवत्ताप्रद शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करने में एक मॉडल के रूप में विकसित हुए हैं ।

कैडेटों के मध्य नागरिक उत्तरदायित्व एवं नेतृत्व की भावना को विकसित करने के लिए सैनिक स्कूलों द्वारा निम्न रूप से दर्शाए अनुसार विभिन्न पहलें की गई हैं :-

- सभी सैनिक स्कूलों में नायकोचित प्रणाली को अपनाया जाता है जिसमें कैडेटों को नेतृत्व क्षमताएं विकसित करने हेतु विशेष उत्तरदायित्व सौंपे जाते हैं ।
- नागरिक उत्तरदायित्वों को समझने एवं नेतृत्व क्षमताएं विकसित करने के लिए कैडेटों को सैनिक स्कूलों तथा अन्य स्कूलों के मध्य आयोजित किए जाने वाले विभिन्न पारस्परिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में भागीदारी करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है ।
- सैनिक स्कूल, आउटरीच कार्यक्रमों सहित सामाजिक कार्य एवं सामुदायिक सेवा परियोजनाओं का उत्तरदायित्व भी उठाते हैं । कैडेट भी विभिन्न पहलों जैसे कि वृक्षारोपण अभियानों, स्वच्छता अभियानों में सम्मिलित होते हैं और स्थानीय सामुदायिक संगठनों में स्वेच्छा से सेवा करते हैं । इससे समाज के प्रति एक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है ।
- कैडेटों को विभिन्न परिवेशों व परिस्थितियों से अवगत करवाने हेतु शैक्षणिक भ्रमणों एवं दौरों की व्यवस्था भी की जाती है । इन अनुभवों से बड़े समुदाय के प्रति अनुकूलन-क्षमता, सांस्कृतिक समझ और उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करने में सहायता मिलती है ।
- बालक एवं बालिका दोनों कैडेटों के लिए एनसीसी अनिवार्य है जो कैडेटों में चरित्र के गुण, साहस और अनुशासनात्मक क्षमताओं का विकास करने में सहायक है ।

रक्षा राज्य मंत्री श्री अजय भट्ट ने आज राज्य सभा में यह जानकारी लेफ्टिनेंट जनरल (डॉ) डी पी वत्स (सेवानिवृत्त) के प्रश्न के लिखित उत्तर में दी।

एबीबी/एसएस